Vol 5 Issue 10 April 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldgrt.lbp.world

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

जयशंकर प्रसाद लिखित कामायनी की दार्शनिकता

कदम दिक्षा बाळासो
तृतीय वर्ष कला हिंदी,
मु. सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर, ता. बारामती, जि. पुणे.

प्रस्तावना : –

जयशंकर प्रसाद लिखित महाकाव्य 'कामायनी' आधुनिक युग की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इतना ही नही आचार्य तुलसीदास के रामचरितमानस के बाद ही सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप 'कामायनी' का उल्लेख किया जाता है। कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने पौराणिक कथानक के माध्यम से प्रतिकात्मक रूप में मनोवैज्ञानिक धरातल पर मन की विविध वृत्तियों का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। जयशंकर प्रसाद हिंदी के आध्यात्मवादी कवि है। इनकी कामायनी पर विशेष रूप में आध्यात्म का , दर्शन का उपनिषदों तथा ब्रम्हसूत्रों का विशेष प्रभाव है। इन सबमें प्रसाद जी पर शैव दर्शन और उसके अंतर्गत प्रत्यभिज्ञादर्शन एवं समरसता का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रसाद की कामायनी का मूलाधार यही दार्शनिक सिद्धांत है, जिसे हम इस प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं।

'कामायनी' महाकाव्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कवि प्रसाद ने 'कामायनी' में अनेक दर्शनों का आधार लिया हैं, फिर भी शैव आगमों का 'कामायनी ' पर गहरा प्रभाव पडा है। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार चार प्रकार के शैवदर्शन प्रसिद्ध है– पाशुपत, शैव, रसेश्वर और प्रत्यभिज्ञा आदि। इनमें से कामायनी में प्रत्यभिज्ञा दर्शन का उल्लेख किया गया है। प्रत्यभिज्ञा का सामान्य अर्थ है– ''जानी हुई वस्तु को पहचानना ''। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार आत्मा चैतन्य स्वरूप है। वह परम शिव की शक्ति है। वही लीलामय आनंद करनेवाली महाचिति है। प्रसाद ने अनेक स्थानों पर इसका वर्णन किया है।

''कर रही लीलामय आनंद, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त ।
विश्व का उन्मीलन अभिराम , इसी में सब होते अनुरक्त।।''

वही आत्मा जब तक अज्ञान और माया से लिप्त रहती है, तब तक वह 'जीव' कहलाती है। कामायनी का मनु जीव का प्रतीक है, जो चिताग्रस्त, भोगासक्त, ईर्ष्या, काम, वासना आदि स्वार्थ भावना से घिरा रहता है, परंतु वही जब श्रद्धा के संयोग से इच्छा, क्रिया, ज्ञान की समरसता पा लेता है, तब अखंड आनंद का अधिकारी बनकर शांभव स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

कामायनी में आत्मा, जीव और जगत का वर्णन प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुकूल ही हुआ है। प्रत्यभिज्ञ दर्शन में पॉच प्रधान तत्व बताए हैं। – नियति, आनंद, इच्छा, क्रिया, ज्ञान, में समन्वय और समरसता, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का प्रतीक वृषभ आदि।

1.नियति :–

'नियम्यते आत्मा अनया सा नियति' अर्थात् जिस शक्ति से आत्मा बद्ध रहती है, वही नियति है। कामायनी में नियति को विश्व के क्रिया व्यापारों की संयोजिका शक्ति माना है। इसी के द्वारा नियति का व्यापार चलता है। इस महाकाव्य में सर्वत्र ही नियति का स्वर सुनाई देता है–

''उस एकांत नियति शासन में, चले विवश धीरे धीरे ।
एक शांत स्पंदन लहरों का,होता ज्यो सागर तीरे''

'इड' सर्ग में नियति को एक नटी कहा है जिसका रूप कोमल और कभी भीषण भी होता है। इसमें नियति के तीन रूप वर्णित हैं–

क. ब्रहम् की वस्तु नियामिका शक्ति।
ख. जीव की कर्म नियोजित शक्ति।
ग. प्रकृति की वैषम्य विरोधिका शक्ति।

2. समरसता :–

प्रत्यभिज्ञा दर्शन में समरसता ही आनंद की विधायक शक्ति है। इसके अनुसार जीवन अच्छा बुरा या सुंदर असुंदर कुछ भी नहीं है। सब कुछ शिव तत्व ही है। इसीलिए तो शिव के सर पर चंद्र और गंगा के साथ सर्प और वीष भी है। शिव पवित्र कैलास पर्वत पर भी रहते है। और अपवित्र स्माशान में भी तांडव रचते है। अतः हिमगिरि पर चिंतातुर मनु को नई आशा देने वाली श्रद्धा का साथ प्राप्त होता है।

कवि ने कामायनी का समापन भी इसी समरसता के संदेश के साथ किया है। प्रसाद जी पुरूष और नारी के संघर्ष को समाप्त करने के लिए भी दोनों में समरसता को आवश्यक मानते है। इसलिए तो प्रसाद ने 'काम' से कहलवाया–

''तुम भूल गए पुरूषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संबंध हुई अधिकार और अधिकारी की।''

कवि के अनुसार समरसता के भी तीन रूप हैं–

क. व्यक्ति की समरसता जो श्रद्धा के द्वारा व्यक्त हुई है।
ख. समाज की समरसता, जिसके अभाव में सारस्वत प्रदेश में संघर्ष हुआ।
ग. प्रकृति और पुरूष की समरसता जो आनंद सर्ग में वर्णित है। यह समरसता परम आनंद की जननी है और केवल श्रद्धा के द्वारा प्राप्त होती है।

3. आनंद :–

वैष्णव विचारधारा में जो स्थान कैवल्य या मुक्ति का है, वही स्थान शैव दर्शन में आनंद का है। कामायनी में वर्णित आनंद आत्मस्थ है। कामायनी में आनंद के दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दोनां रूपों का चित्रण हुआ है। एक का आधार सौदर्य है तो दूसरे का समरसता। एक की प्राप्ती स्त्री–पुत्रादि से होती है,तो दूसरे की शिव के साथ सामंजस्य स्थापित करने से। केवल सांसारिक आनंद वासनापूर्ण होने से क्षणिक होता है, परंतु आत्मिक आनंद सात्विक एवं अखंड होता है। इसकी उपलब्धि से बाहय सुख दुख, जड चेतन आदि सब अभेद स्थिती को प्राप्त हो जाते हैं –

''सब भेदभाव भुलाकर,दुःख सुख को दृष्य बताना ।
मानव कहे रे ! यह मैं हूँ, यह विश्वनीड बन जाता ।।''

सांसारिक विडबनाओं में फॅसा हुआ आदमी वास्तविक आनंद नहीं पा सकता। इसके लिए उसे आनंद के अध्यात्मिक स्वरूप को पहचानना चाहिए। निवृत्ती के द्वारा नही पहचाना जा सकता। परंतु विश्व को कर्मस्थल मानने से ही सिद्ध हो सकता है। इसलिए 'काम' मनु से कहता है –

''यह नीड मनोहर कृतियों का, यह विश्व कर्म रंगस्थल है।
परंपरा लग रही यहाँ, ठहरा जिसमें जितना बल हैं।।''

यह आनंद तीन प्रकार का बताया गया है –

क.लौकिक आनंद
ख.दार्शनिक आनंद
ग.आध्यात्मिक आनंद

4.इच्छा,किया,ज्ञान का समन्वय –

शैव दर्शन में शिव को आद्य शक्ति का संचालक माना गया है। यह शक्ति विभिन्न रूपों में हैं। पार्वती,चंडिका,आंबिका,अपर्णा और दुर्गा आदि सब इसी के रूप हैं। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार मानव में स्थित इच्छा,किया,ज्ञान कमशाः रजोगुण, तमोगुणी, सतोगुणी प्रवृत्तियॉ है। मन की इन तिनों वृत्तियों में समरस्य स्थापित होने पर ही पूर्णता की स्थिती प्राप्त होती है। इनकी भिन्नता ही जीवन की विडंबना हैं। कवी

लिखते हैं –

''ज्ञान दूर कुछ किया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडंबना हैं जीवन की।।''

कामायनी के अनुसार इच्छा,क्रिया और ज्ञान का समन्वय तभी संभव हैं,जब मन को विविध यातनाएँ सहनी पडती हैं। श्रद्धा के द्वारा ही 'त्रिपुरा' दर्शन की प्राप्ती होती है। और अंत में –

''स्वप्न, स्वाय,जागरण भस्म हो,इच्छा, किया,ज्ञान मिल गऐ थे।
दिव्य अनाहत पर निनाद में श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे।।''

इस प्रकार श्रद्धा के द्वारा ही इच्छा,क्रिया,ज्ञान एक होकर मानव को 'शिवोहम' की स्थिति तक पहुँचाते हैं। और वहाँ पहुँचने पर ही दिव्य अनहद नाद अर्थात् शिव के डमरू की ध्वनि को सुना जा सकता है।

5.चतुवर्ग का प्रतीक वृशभ–

धर्म के चार चरण धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के प्रतीक रूप चतुष्पाद वृषभ की कल्पना शैव दर्शन में की गई है। कामायनी के अंतिम भाग में मानव और इडा की यात्रा में वृषभ को सहायक बनाया गया है। आनंदमय शिवलोक की यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति के जीवन में धर्म का स्थान अनिवार्य माना गया है।

''इस वृषभ धर्म प्रतिनिधि को, उत्सर्ग करेंगं जाकर।
चिर मुक्त रहें यह निर्भय, स्वच्छंद सदा सुख पाकर।।''

इस प्रकार कामायनी में प्रसाद ने जिस शैव दर्शन को लक्ष्य में रखा है उसका मूल आधार प्रत्यभिज्ञ दर्शन ही है। प्रसाद मूलतः कवि है, अतः दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए कामायनी में दर्शन की नीरसता कहीं नहीं आने पाई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कामायनी के दार्शनिकता में शिव के बारे में बताया गया है। अतः उनका दर्शन किस प्रकार हमें जीवन में सफल बनाएगा इसका चित्रण कामायनी में मिलता है।

समापन :–

अतः हम कह सकते है कि प्रसाद की कामायनी का मूलाधार यही शैवदर्शन है जिसे प्रसाद जी ने प्रारंभ से अंत तक उसका निर्वाह किया है। एक भक्त की मानसिक दशा की प्रारंभिक है। इन सब में व्यक्त की शैव सिद्धांत की दार्शनिकता है। पाठक ज कामायनी पढता है तो वह भी आनंद की यात्रा करें, यही प्रसाद की दार्शनिकता का उद्देश्य है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.कामायनी जयशंकर प्रसाद
2.कामायनी का वैदिक भाष्य डॉ. रामकुमार सिंह

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.www.oldgrt.lbp.world